अध्याय
04

सत्ता के वैकल्पिक केन्द्र

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात दुनिया में उत्पन्न परिस्थितियों से परिचित होंगे।
- विद्यार्थी दो महाशक्तियों संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ के विकल्प के रूप में दुनिया में नई शक्तियों एवं वैकल्पिक केंद्र के उदय से परिचित होंगे।
- यूरोपीय संघ एवं आसियान जैसे उभरते संगठनों के प्रभावों से विद्यार्थी परिचित होंगे।
- चीन एवं भारत जैसे उभरते देशों की भूमिका को विद्यार्थी समझ सकेंगे।
- द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात दुनिया में दो महाशक्तियों का उदय हुआ था-संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ।।
- 1990 के दशक में विश्व राजनीति में दो ध्रुवीय व्यवस्था टूट गई।

अमेरिकी वर्चस्व का कुछ सीमा तक सीमित होना

- यूरोपीय संघ और दक्षिण- पूर्वी एशियाई देशों के संगठन आसियान ने स्वयं को विश्व राजनीतिक एवं आर्थिक व्यवस्था के समक्ष एक मजबूत विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया।
- चीन के आर्थिक उत्थान ने विश्व राजनीति पर गहरा प्रभाव डाला।
- 1978 में देंग श्याओपेंग ने' (ओपेन डोर') मुक्त द्वार की नीति अपनाई।

दूसरे विश्वयुद्ध की समाप्ति के पश्चात यूरोपीय देशों ने पुरानी शत्रुता को भूल कर अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में सकारात्मक पहल करने का प्रयत्न किया।

यूरोपीय संघ की स्थापना के पूर्व की घटनाएँ

- संयुक्त राज्य अमेरिका ने 1948 में मार्शल योजना के तहत यूरोपीय आर्थिक सहयोग संगठन की स्थापना की।

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23
© JCERT not to be republished

- संयुक्त राज्य अमेरिका के नेतृत्व में 1949 में नाटो की स्थापना कर एक सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था को जन्म दिया गया।
- 1949 ईस्वी में राजनीतिक सहयोग के लिए यूरोपीय परिषद गठित की गई।
- 1957 में यूरोपीयन इकोनामिक कम्युनिटी का गठन हुआ।
- सोवियत संघ के पतन के पश्चात् 1992 में यूरोपीय संघ की स्थापना हुई।

यूरोपीय संघ

- अब यूरोप में समान विदेश और सुरक्षा नीति आंतरिक मामलों तथा न्याय से संबंधित मुद्दों पर सहयोग और एक समान मुद्रा के चलन का मार्ग प्रशस्त हुआ।
- यूरोपीय संघ आर्थिक सहयोग वाली व्यवस्था से बदलकर राजनैतिक सहयोग वाली व्यवस्था का रूप लेता चला गया।
- अब यूरोपीय संघ एक विशाल राष्ट्र- राज्य की तरह काम करने लगा।
- 2003 में यूरोपीय संघ के संविधान बनाने की कोशिश असफल हो गई।
- यूरोपीय संघ का अपना झंडा, गान, स्थापना दिवस और अपनी मुद्रा है।
- यूरोपीय संघ का आर्थिक, राजनीतिक, कूटनीतिक तथा सैनिक प्रभाव उल्लेखनीय रहा।
- 2016 में यूरोपीय संघ दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी।
- विश्व व्यापार में इसका हिस्सा अमेरिका से 3 गुना ज्यादा है।
- इसका आर्थिक प्रभाव एशिया और अफ्रीका के क्षेत्रों पर भी है।
- यह विश्व व्यापार संगठन के भीतर एक महत्वपूर्ण समूह के रूप में काम करता है।
- यूरोपीय संघ के 2 सदस्य ब्रिटेन और फ्रांस सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य हैं।
- यूरोपीय संघ के पास दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी सेना है
- यूरोपीय संघ के 2 देश ब्रिटेन और फ्रांस परमाणु हथियार संपन्न देश हैं।
- यूरोपीय संघ के कुछ देशों ने यूरो मुद्रा को नहीं अपनाया।

द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात यूरोपीय एकता की प्रमुख घटनाएं-

- अप्रैल 1951 में पश्चिम यूरोप के 6 देशों- फ्रांस, पश्चिम जर्मनी, इटली, बेल्जियम, नीदरलैंड और लक्जमबर्ग ने पेरिस संधि के तहत यूरोपीय कोयला और इस्पात समुदाय का गठन किया।
- इन्हीं छह देशों में 1957 में रोम की संधि के तहत यूरोपीय आर्थिक समुदाय और यूरोपीय एटमी ऊर्जा समुदाय का गठन किया।
- जून 1979 में यूरोपीय संसद के लिए पहला प्रत्यक्ष चुनाव हुआ।

© JCERT not to be republished

- 1990 में जर्मनी का एकीकरण हुआ।
- फरवरी 1992 में यूरोपीय संघ के गठन के लिए मास्ट्रिस्ट संधि पर हस्ताक्षर हुए।
- जनवरी 2002 में 12 सदस्य देशों ने नई मुद्रा यूरो को अपनाया।
- दिसंबर 2009 में लिस्बन संधि लागू हुई।
- 2012 में यूरोपीय संघ को नोबेल शांति पुरस्कार मिला।
- 2016 में ब्रिटेन में जनमत संग्रह हुआ। इस जनमत संग्रह में 51.9% मतदाताओं ने फैसला लिया कि ब्रिटेन यूरोपीय संघ से बाहर हो जाएगा।
- ब्रिटेन के यूरोपीय संघ से बाहर होने की घटना को ब्रेक्जिट कहा गया।

द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व दक्षिण पूर्व एशियाई देशों का हिस्सा बार-बार यूरोपीय और जापानी उपनिवेशवाद का शिकार हुआ था।

बांडुंग सम्मेलन और गुटनिरपेक्ष आंदोलन के माध्यम से एशिया और तीसरी दुनिया के देशों में एकता स्थापित करने की कोशिश अनौपचारिक स्तर पर सहयोग और मेलजोल कराने के मामले में सफल नहीं हो रहे थे।

आसियान:-दक्षिण-पूर्व एशियाई राष्ट्रों का संगठन।

1. 1967 में 5 दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों ने बैंकॉक घोषणा पर हस्ताक्षर करके आसियान की स्थापना की। ये पांच देश थे इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलीपींस, सिंगापुर और थाईलैंड।
2. आसियान का मुख्य उद्देश्य आर्थिक विकास को गति प्रदान करना और उस के माध्यम से सामाजिक और सांस्कृतिक प्रगति हासिल करना था।
3. वर्तमान में आसियान के 10 सदस्य राष्ट्र हैं।
4. आसियान के प्रतीक चिन्ह में धान की 10 बालियाँ इसके 10 सदस्य देशों को चिन्हित करती हैं।
5. प्रतीक चिन्ह में वृत आसियान की एकता का प्रतीक है।

आसियान शैली

- टकराव- रहित संबंध
- सहयोगपूर्ण मेल मिलाप
- राष्ट्रीय सार्वभौमिकता का सम्मान

2003 में आसियान ने आसियान सुरक्षा समुदाय, आसियान आर्थिक समुदाय और आसियान सामाजिक सांस्कृतिक समुदाय नामक तीन स्तंभों के आधार पर आसियान समुदाय बनाने की दिशा में कदम बढ़ाए।

1994 में आसियान क्षेत्रीय मंच की स्थापना की गई।

एक आर्थिक संगठन के रूप में आसियान

- आसियान की अर्थव्यवस्था अमेरिका, यूरोपीय संघ और जापान की तुलना में छोटी है परंतु इसका विकास इन सबसे अधिक तेजी से हो रहा है।

© JCERT not to be republished

- आसियान आर्थिक समुदाय का प्रमुख उद्देश्य आसियान देशों का साझा बाजार और उत्पादन आधार तैयार करना है।
- इसका उद्देश्य आसियान देशों के सामाजिक और आर्थिक विकास में मदद करना है।
- आसियान ने निवेश, श्रम और सेवाओं के क्षेत्र में मुक्त व्यापार क्षेत्र(FTA) बनाने पर ध्यान दिया है। इस क्षेत्र में आसियान के प्रति अमेरिका और चीन ने भी पहल की है।
- आसियान के विजन दस्तावेज 2020 में अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में टकराव की जगह बातचीत को बढ़ावा देने की नीति पर बल दिया गया है।
- आसियान में बातचीत के द्वारा कंबोडिया के टकराव और पूर्वी तिमोर के संकट को समाप्त किया है।
- आसियान ने 1999 से नियमित रूप से पूर्वी एशियाई सहयोग पर वार्षिक बैठक आयोजित की है।
- भारत ने दक्षिण- पूर्वी एशियाई देशों के आर्थिक महत्व को समझते हुए 1991 में लुक ईस्ट एवं 2014 में एक्ट ईस्ट नीति अपनाई।
- भारत ने आसियान सदस्य देशों- मलेशिया, सिंगापुर और थाईलैंड के साथ मुक्त व्यापार का समझौता किया है।
- 2010 में आसियान-भारत मुक्त व्यापार क्षेत्र व्यवस्था लागू की गई।

चीनी अर्थव्यवस्था का उत्थान

- आर्थिक सुधारों को आरंभ करने के पश्चात् चीन आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभर रहा है।
- उसकी आर्थिक वृद्धि की रफ्तार को देखते हुए माना जा रहा है कि 2040 तक वह दुनिया की सबसे बड़ी आर्थिक महाशक्ति संयुक्त राज्य अमेरिका से भी आगे निकल जाएगा।

चीनी अर्थव्यवस्था में परिवर्तन

- चीन की जनसंख्या में तीव्र वृद्धि अर्थव्यवस्था के साम्यवादी मॉडल की सफलता में बाधाएँ उत्पन्न कर रही थीं।
- चीन में खेती की पैदावार उद्योगों की जरूरत पूरी करने लायक अधिशेष नहीं दे रही थी।
- चीन में औद्योगिक उत्पादन तेजी से नहीं बढ़ रहा था, विदेशी व्यापार न के बराबर था और प्रति व्यक्ति आय बहुत कम थी।
- चीन ने 1972 में अमेरिका से संबंध बनाकर अपने राजनैतिक और आर्थिक अलगाव को खत्म किया।

1973 में प्रधानमंत्री चायू एनलाई के आधुनिकीकरण के क्षेत्र में 4 प्रस्ताव

1. कृषि का आधुनिकीकरण
2. उद्योग का आधुनिकीकरण
3. सेना का आधुनिकीकरण
4. विज्ञान और प्रौद्योगिकी का आधुनिकीकरण

© JCERT not to be republished

देंग शयाओपेंग की खुले द्वार की नीति

- विदेशी पूंजी और प्रौद्योगिकी के निवेश से उच्चतर उत्पादकता को प्राप्त करने पर बल दिया गया।
- बाजारमूलक अर्थव्यवस्था को अपनाने के लिए चीन ने शॉक थेरेपी पर अमल करने की जगह अपनी अर्थव्यवस्था को चरणबद्ध ढंग से खोला।
- चीन में 1982 में खेती का निजीकरण किया गया।
- चीन में 1998 में उद्योगों का निजीकरण किया गया।
- व्यापार संबंधी अवरोधों को सिर्फ विशेष आर्थिक क्षेत्रों के लिए ही हटाया गया जहां विदेशी निवेशक अपने उद्यम लगा सकते थे।
- कृषि के निजीकरण के कारण कृषि उत्पादों तथा ग्रामीण आय में विशेष वृद्धि दर्ज की गई।
- नए व्यापारिक कानूनों एवं विशेष आर्थिक क्षेत्रों के निर्माण से विदेशी व्यापार में विशेष वृद्धि दर्ज की गई।
- चीन पूरे विश्व में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की दृष्टि से सबसे आकर्षक देश बनकर उभरा।
- उद्योगों के क्षेत्र में भी भारी वृद्धि दर्ज की गई।
- 2001 में चीन विश्व व्यापार संगठन में शामिल हो गया।
- चीन के विदेशी मुद्रा भंडार में भारी वृद्धि हुई।

चीनी अर्थव्यवस्था के नकारात्मक पक्ष

- चीन में हर किसी को सुधारों का लाभ नहीं मिला।
- चीन में 10 करोड़ लोग बेरोजगार हैं।
- चीन में महिलाओं के रोजगार की स्थिति उतनी ही खराब है जितनी यूरोप में 18वीं और 19वीं सदी में थी।
- चीन में पर्यावरण के नुकसान बड़े पैमाने पर देखे गए।
- भ्रष्टाचार में भी वृद्धि हुई।
- चीन में गांव और शहर तथा तटीय और मुख्य भूमि पर रहने वाले लोगों के बीच की आर्थिक दूरी बढ़ती जा रही है।
- चीन अपने आर्थिक वर्चस्व हेतु निर्धन देशों पर दबाव बढ़ाने का प्रयास करता है।

पश्चिमी साम्राज्यवाद के उदय से पूर्व भारत और चीन एशिया की महत्वपूर्ण शक्तियाँ थी। उस दौर में भारत और चीन का प्रभाव राजनैतिक के अलावा आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक भी था। परंतु दोनों देशों के बीच प्रत्यक्ष संबंध सीमित ही रहे।

1950 और 1960 के दशक में भारत -चीन संबंध

- 1950 में हिंदी -चीनी भाई -भाई का नारा लोकप्रिय हुआ।

© JCERT not to be republished

- परंतु सीमा विवाद पर चले सैन्य संघर्ष ने इस उम्मीद को खत्म कर दिया।
- चीन द्वारा अरुणाचल प्रदेश के कुछ क्षेत्रों और अक्साई चीन पर दावा करने के चलते 1962 में **भारत -चीन युद्ध हुआ।**

1970 के पश्चात भारत और चीन संबंध

- 1976 तक दोनों देशों के बीच कूटनीतिक संबंध आरम्भ नहीं हुए।
- 1981 से भारत और चीन के बीच सीमा विवादों को सुलझाने के लिए वार्ताओं की श्रृंखला भी शुरू हो गई।
- शीत युद्ध की समाप्ति के पश्चात् भारत और चीन- दोनों ही स्वयं को विश्व राजनीति की उभरती शक्ति मानते हैं।
- दिसंबर 1988 में राजीव गांधी द्वारा चीन का दौरा करने से भारत-चीन संबंधों को सुधारने के प्रयत्नों को बढ़ावा मिला।
- दोनों देशों ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान, विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में परस्पर सहयोग और व्यापार के लिए सीमा पर चार पोस्ट खोलने हेतु समझौते भी किए।
- चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने 2014 में भारत का दौरा किया तथा 2015 में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी चीन गए।
- पाकिस्तान के परमाणु हथियार कार्यक्रम में भी चीन को मददगार माना जाता है।
- बांग्लादेश और म्यांमार के साथ चीन के सैनिक संबंधों को दक्षिण एशिया में भारतीय हितों के विरुद्ध माना जाता है।
- इन विवादों के बावजूद भारत और चीन के बीच राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संबंध जारी हैं।
- दोनों देशों के नेता और अधिकारी निरंतर विवादों को सुलझाने का प्रयास करते रहते हैं।

जापान का आर्थिक उदय

दितीय विश्व युद्ध के पश्चात जापान की आर्थिक प्रगति

- परमाणु बम की विभीषिका झेलने वाला एकमात्र देश जापान है।
- जापान के पास प्राकृतिक संसाधन सीमित मात्रा में है।
- जापान अधिकांश कच्चे मालों का आयात करता है।
- इन परिस्थितियों के बावजूद जापान ने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद आर्थिक क्षेत्र में तीव्र वृद्धि दर्ज की।
- जापान 1964 में आर्थिक सहयोग तथा विकास संगठन का सदस्य बना।
- 2017 में जापान की अर्थव्यवस्था विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई।
- जापान एकमात्र एशियाई देश है जो समूह- 7 के देशों में शामिल है।
- आबादी की दृष्टि से जापान विश्व का ग्यारहवाँ सबसे बड़ा देश है।
- जापान संयुक्त राष्ट्र संघ के बजट में 10% का योगदान करता है।

© JCERT not to be republished

- संयुक्त राष्ट्र संघ के बजट में अंशदान करने की दृष्टि से जापान दूसरा सबसे बड़ा देश है।
- 1951 से जापान का अमेरिका के साथ सुरक्षा गठबंधन है।
- जापान सैन्य खर्च में विश्व में सातवां स्थान रखता है।
- जापान के संविधान के अनुच्छेद 9 में कहा गया है कि राष्ट्र के संप्रभु अधिकार के रूप में युद्ध को तथा अंतर्राष्ट्रीय विवादों को सुलझाने में बल प्रयोग अथवा धमकी से काम लेने के तरीके का जापान के लोग हमेशा के लिए त्याग करते हैं।

प्रमुख जापानी ब्रांड

- सोनी
- पैनासोनिक
- कैनन
- सुजुकी
- होंडा
- टयोटा
- माज्दा

आसीमो विश्व का सबसे अत्याधुनिक मानव रूपी रोबोट है।

दक्षिण कोरिया की आर्थिक प्रगति

द्वितीय विश्वयुद्ध के अन्त के पश्चात् दक्षिण कोरिया (रिपब्लिक ऑफ कोरिया) और उत्तरी कोरिया (डेमोक्रेटिक पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ कोरिया) का 38 वीं समानांतर रेखा के साथ - साथ विभाजित किया गया।

- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद दक्षिण कोरिया की अर्थव्यवस्था
- 1950 53 के दौरान कोरियाई युद्ध और शीत युद्ध काल की गतिशीलता ने दोनों पक्षों के बीच प्रतिद्वंदिता को तेज कर दिया।
- 17 सितंबर 1991 को दोनों कोरियाई राष्ट्र संयुक्त राष्ट्र के सदस्य बने।
- 1960 और 1980 के दशक के बीच दक्षिण कोरिया मजबूत आर्थिक शक्ति के रूप में उभरा जिसे हान नदी का चमत्कार कहा जाता है।
- दक्षिण कोरिया 1996 में ओईसीडी का सदस्य बनकर बना।
- मानव विकास रिपोर्ट 2022 के अनुसार दक्षिण कोरिया का स्थान 19 वां है।
- सफल भूमि सुधार, ग्रामीण विकास, व्यापक मानव संसाधन विकास और तीव्र आर्थिक वृद्धि दक्षिण कोरिया की प्रमुख आर्थिक विशेषताएं हैं।
- सैमसंग, एलजी और हुंडई दक्षिण कोरिया के प्रसिद्ध ब्रांड हैं।

© JCERT not to be republished

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. खुले द्वार की नीति चीन में किसने अपनाई?

   a. माओत्से तुंग

   b. डॉक्टर सनयात सेन

   c. देंग श्याओपेंग

   d. इनमें से कोई नहीं।

2. यूरोपीय संघ की स्थापना कब की गई?

   a. 1990 b. 1992

   c. 1995 d. 1982

3. भारत ने एक्ट ईस्ट पॉलिसी कब अपनाई?

   a. 1991 b. 2000

   c. 2011 d. 2014

4. भारत- चीन युद्ध कब हुआ?

   a. 1955 b. 1960

   c. 1962 d. 1971

5. एशिया का कौन- सा देश समूह -7 का सदस्य है?

   a. चीन b. जापान

   c. दक्षिण कोरिया d. भारत

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. आसियान शैली से क्या समझते हैं?
2. खुले द्वार की नीति से क्या अभिप्राय है?
3. दुनिया में जापान के प्रसिद्ध ब्रांड कौन-कौन से हैं?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. आर्थिक शक्ति के रूप में चीन के उदय ने वैश्विक व्यवस्था के समक्ष एक मजबूत विकल्प कैसे प्रस्तुत किया? विश्लेषण करें।
2. यूरोपीय संघ के आर्थिक एवं राजनीतिक प्रभावों की विवेचना करें।

© JCERT not to be republished